ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal) | Impact Factor: 7.580|

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 5, Issue 6, June 2018

हिन्दी समकालीन साहित्य में स्त्री-विमर्श

डॉ0 अशोक कुमार शर्मा

सह आचार्य, हिन्दी, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गंगापुर सिटी

प्रस्तावना :-

साहित्य में समकालीन यह शब्द समय सूचक है। विमर्श का अर्थ है निरंतर संवाद। स्त्री-विमर्श अर्थात अंग्रजी में फेमिनिज्म है। स्त्री-विमर्श अर्थात स्त्री जीवन के छुए-अनुछुए पल, अनजाने पीड़ादायक स्थिति का उदघाटन करते हुए उनके कारणों की खोज करना है, जो जीवन में स्त्री की दुय्यम दर्जे की स्थिति के लिए उत्तरदायी है। स्त्री का व्यक्ति के रूप में प्रकाशित हो सकना और अपनी संपूर्णता में जी सकने का रास्ता भी स्त्री-विमर्श खोजता है। स्त्री-विमर्श साहित्य का केन्द्र बिंदू स्त्री की अस्मिता होता है। जिसके अंतर्गत सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक बराबरी के लिए संघर्ष करती तथा मुक्ति के लिए प्रयास करती स्त्री है। स्त्री से मुक्ति का तात्पर्य पुरुष बनना या पुरुष को अपमानित करना, या पुरुषों से मुक्ति पाना ऐसा कदापि नहीं है बल्कि स्त्री का खुलकर बाहर आकर स्त्री समस्याओं का डटकर सामना करके मनुष्यत्व की दिशा में अग्रसर होना ही स्त्री-विमर्श है। जिसका सबसे बड़ा माध्यम है साहित्य।

स्वामी विवेकानंद जी ने भी नारी की महता को व्यक्त करते हुए कहा है कि "स्त्री पूजन से ही समाज की प्रगति होती है, जिस देश में अथवा समाज में स्त्री पूजन नहीं होता है, वह देश अथवा समाज कभी ऊँचा नहीं उठ सकता"।

स्त्री-विमर्श साहित्यकार :-

समकालीन हिन्दी साहित्य में उषा प्रियम्वदा, अमृता प्रीतम, कृष्णा सोबती, मन्नु भंडारी, शिवानी मैत्रीय पुष्पा, मृणाल पांडे, कात्यायनी, क्षमा शर्मा, अनामिका, दिव्या जैन, प्रभा खेतान, मनीषा, नासिरा शर्मा, चित्रा मुद्गल, तसलीमा नसरीन, मृदुला गर्ग, सुधा अरोड़ा, सरला माहेश्वरी, अर्चना वर्मा, नीलम कुलश्रेष्ठ आदि स्त्री लेखिकाओं का साहित्य स्त्री मन के अंर्तद्वंदो एवं आप बीती घटनाओं को उदघाटित करता नजर आता है। जो आज स्त्री विमर्श का ज्वलंत मुद्दा बना है। वैसे वो छायावाद काल की महादेवी वर्मा की श्रृंखला की कड़िया नारी सशक्तिकरण का एक सुंदर उदाहरण है।

स्त्री लेखिकाओं के अलावा पुरुष लेखकों ने भी अपने वक्त की नब्ज पहचानते हुए देश की आधी आबादी अर्थात स्त्री की दशा का गहनता से अध्ययन-मनन किया। स्त्री के दौयम दर्जे की स्थिति के कारण को खोजा और उसके निदान का प्रयास किया। समकालीन स्त्री-विमर्श साहित्यकारों में कमलेश्वर, राजेंद्र यादव, उपेन्द्रनाथ अश्क, मोहन राकेश, अरविंद जैन, फणीश्वरनाथ रेणू, जगदीश्वर चतुर्वेदी, लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी, राजकिशोर, डॉ. धर्मवीर, सुधीश पचौरी आदि साहित्यकारों की भूमिका महत्वपूर्ण रही। वैसे तो प्रेमचंद के साहित्य में भी नारी शोषण की समस्याओं को उठाया गया है।

समकालीन आत्मकथा - स्त्री-विमर्श :-

आत्मकथा में परकाया प्रवेश नहीं, स्वकाया प्रवेश होता है। स्त्री लेखिकाओं ने अपनी आत्मकथाओं के माध्यम से स्त्री शोषण उत्पीड़न, पीड़ा, व्यथा, रुढि परंपराओं के जकड़नों में फंसी स्त्री व्यथा, पुरुष निर्मित पितृसत्ताक पद्धती से सहमी स्त्री इन सकबे परिणाम स्वरुप आए जागरण को ही अपनी रचना के केन्द्र में रखा है।

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal) | Impact Factor: 7.580|

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 5, Issue 6, June 2018

कुसुम अंसल द्वारा लिखित "जो कहा नहीं गया" आत्मकथा में एक ऐसी स्त्री की जीवन कथा है जो अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए जीवनभर जूझती रही। पितृसत्ताक पद्धति की शिकार कुसम अंसल जी ने लड़के को बीना देखे ही पिता के कहने पर ब्याह कर लिया।

"क्यों लगा दिए, दीवारों पर

इतने सारे चित्र, जानती हूँ - इनके साथ

तुम मुझे भी नुमाइश बनाकर

जताना चाहते हो, कितना चाहते हो मुझे।"[2]

वैवाहिक जीवन की विफलता और अपनी मनोदशा को कविता के रुप में कुसूम अंसल जी ने व्यक्त किया। आखिरकार पति से अलग होकर कुसुम अंसल ने अपने जीवन के खालीपन को साहित्य लेखन द्वारा भर कर अपनी नयी पहचान बनायी। सुनिता जैन की 'शब्दकाया' आत्मकथा में स्त्री को पारिवारिक जिम्मेदारियाँ निभाते हुए किया है। अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए कितने त्याग और संघर्ष करने पडते है। इसका मार्मिक चित्रण किया है।

कृष्णा अग्निहोत्री की पहली आत्मकथा 'लगता नहीं है दिल मेरा' पितृसत्तात्मक नैतिक प्रतिमानों की धज्जियाँ उडाकर रख देती है। जिसमें पुत्र के सामने पुत्री को अस्तित्वहीन बना दिया है। बेटी होना एक अपराध की भावना निर्माण कर देता है। उन्हीं की दूसरी आत्मकथा 'और... और औरत' में जिसमें कृष्णा अग्निहोत्री जी निरंतर संघर्ष करके जीने वाली पुरुष अहं और स्वार्थ से पीड़ित नारी होने के बावजूद सशक्त महिला के रूप में सामने आती है।

मैत्रीय पुष्पा की 'कस्तुरी कुण्डल बसे' आत्मकथा माँ बेटी के रिश्ते से दो पीढी की नारियों के विचार विकार मूल्य संकल्पनाएं, धर्म, जाति आदि धारणाएं प्रकाशित हो रही है। नारी आधुनिक हो गई अर्थात स्त्री ने अपने ढंग से जीने का रास्त ढूंढ लिया है। लेकिन पुरुष वर्चस्वीय सामाजिक बंधन में स्वतंत्र और आत्मनिर्भर होने के प्रयास में स्त्री को किन-किन समस्याओं का सामना करना पड़ता है, स्त्री के इस संघर्षमयी जीवन का आख्यान इस कृति में मिलता है।

रमणिका गुप्ता द्वारा रचित चार भागों में विभाजित 'हादसे' इस आत्मकथा में उनके एक-एक संघर्ष की दासता है। रमणिका अपनी जिद की पक्की इरादों में दृढ, अन्तर्जातीय विवाह करने में सफल रही है और उस जमाने में यह विवाह करिश्मा ही रहा होगा। हादसे में वर्णित रमणिका जी की जीवन यात्रा बहुत रोमांचक भी है, प्रेरणापद भी है और साहस के लिए प्रशंसा का भाव भी दर्शाती है।

प्रभा खेतान की आत्मकथा 'अन्या से अनन्या' जिसमें उन्होंने खुलकर अपनी जीवन की गतिविधियों के बारे में लिखा है। मन्नु भंडारी की आत्मकथा 'एक कहानी यह भी मन्नुजी की जीवन स्थितीयों में माँ, बेटी, पत्नी इनके बीच खंडिता लेखकीय रूप के संघर्ष के साथ उनके दौर की कई साहित्यिक, सामाजिक और राजनैतिक परिस्थितियों पर भी रोशनी डालती है।

रामकालीन उपन्यास स्त्री विमर्श :-

रामकालीन साहित्य में नारी जीवन को केंद्र में रखकर बहोत सारे साहित्यकारों ने उपन्यास लेखन किया। चित्रा मुद्गल जी के उपन्यास 'एक जमीन अपनी', 'ऑवा', 'गिलिगडु नारीवादी सरोकार के साक्ष्य है। पुरूष प्रधान समाज व्यवस्था में नारी के अधिकारों को छीना जा रहा है साथ ही पुरुष समाज उसे केवल स्वार्थ एवं वासनापूर्ति की वस्तु मानता है। केवल पुरुषों के द्वारा ही स्त्रियों का शोषण नहीं होता है बल्कि महिलाएँ भी महिलाओं का शोषण करती है। इन सब परिस्थितियों से अवगत होकर चित्रा मुद्गल जी ने अपने उपन्यासों में नारी की विभिन्न समस्याओं को समाज के समक्ष प्रत्यक्षतः प्रस्तुत करके नारी चेतना का अत्यंत सराहनीय कार्य किया है।

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal) | Impact Factor: 7.580|

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 5, Issue 6, June 2018

मैत्रीय पुष्पा द्वारा लिखित आदिवासी नारी की समस्या पर केंद्रीत 'अल्मा कबूतरी उपन्यास सोचने के लिए विवश कर देता है।

कमलेश्वरती के उपन्यासों में उच्च कोटी का स्त्री विमर्श देखा जा सकता है। उनके चौदह उपन्यासों में प्राय स्त्री ही केन्द्र बिंदू रही है। एक सडक सत्तावन्न गलियों में उन्होंने विद्रोहिणी स्त्री बंसिरी का सृजन किया। 'लौटें हुए मुसाफिर' की सलमा पति के समलैंगिक संबंध से तनावग्रस्त अवस्था में पितृसत्तात्मक समाज के खिलाफ जाकर पति को छोडना, पुरुष द्वारा छली जाना का चित्रण समाज में स्त्री पक्ष को सामने लाता है। डाक बंगला' की इरा पाश्चात्य स्त्री विमर्श से सराबोर चरित्र है। 'आगामी अतीत में कमलेश्वर ने चंदा और चॉदनी के जीवन के द्वन्दों एवं चॉदनी की स्वतंत्र जीवन जीने की इच्छा को सजीव रुप से चित्रित किया है। कृष्णा सोबती का उपन्यास 'सूरजमुखी अंधेरे के बचपन बलात्कार की समस्या पर आधारित है।

उषा प्रियंवदा पचपन खंबे लाल दिवारे रुकोगी नहीं राधिका, शेष यात्रा नारी चेतना का उत्तम उदाहरण है। राजेन्द्र यादव तथा मोहन राकेश की रचनाओं में स्त्री की घुटन तथा अंर्तद्वंद को बहुत मार्मिकता से चित्रित किया है।

निष्कर्ष :-

हिन्दी साहित्य की गद्य हो या पद्य विधा स्त्री-विमर्श से अछूती नहीं रही है। कहानी, उपन्यास, कविता नाटक, आत्मकथा हर एक विधा में स्त्री हो या पुरुष सभी साहित्यकारों ने स्त्री की भौतिक और भावात्मक उपस्थिती उसकी नियति, उसकी संवेदना, आत्मसंघर्ष, उसकी अस्मिता और स्वतंत्र विचार तथा मुक्ति की चेतना को हमारे युग के संघर्षमय जीवन में समझने का बखुबी प्रयास किया है। स्त्री-विमर्श की सफलता इसी में है कि वह स्त्री की विभिन्न समस्याओं का ठोस और सकारात्मक हल प्रस्तुत करे। नारी विमर्श से स्त्रियों में आत्मविश्वास बढ़ा है, अपनी अस्मिता के प्रति जागरुकता निर्माण हुई। नारी शिक्षा का महत्व समझा गया। पुरुष वर्चस्व तोड़कर समानाधिकार की और स्त्री अग्रसर होने लगी। मानवाधिकार के प्रति सजग होती दिखाई दे रही है। स्त्री मुक्ति का मतलब न तो विरोध पुरुषों से है और ना ही विवाह संस्था से बल्कि सामाजिक मर्यादाओं का पालन करते हुए समानाधिकार के साथ पुरुष का स्वीकार करना है।

संदर्भ सूची :

1. "भारतीय नारी" (अनु. श्री इंद्रदेवसिंह आर्य) - स्वामी विवेकानंद पृष्ठ 99
2. "जो कहा नहीं गया" आत्मकथांश कुसुम अंसल - पृष्ठ 105
3. "इक्कीसवी सदी का हिन्दी साहित्य" - रविन्द्रनाथ मिश्र - 181